श्रीमते रामानन्दाय नमः

मानस में नारी दीक्षा और नारी निन्दा

लेखक :—

मानसतत्वान्वेषी—

पं० श्री रामकुमारदास जी रामायणी

मणिपर्वत श्री अयोध्या जी

प्रकाशक:—

पं० मानस प्रपन्न त्रिपाठी रामायणी

श्रीरामग्रंथागार, मणिपर्वत श्रीअयोध्याजी।

योगिराज, परमहंस महान्त—

श्रीरणछोर दासजी महाराज

'चित्रकूटी' राजकोट के सम्पूर्ण अर्थ साहाय्य से प्रकाशित

प्रथम संस्करण १००० प्रति श्रीकृष्णजन्माष्टमी २०२२ वि०

पुनः प्रकाशनार्थ मूल्य ।।)

मुद्रक:—विरक्त प्रिंटिंग प्रेस, श्रीअयोध्याजी।

तू जग जननी नारी महान।

१

तू आदि मानवी सतरूपा, तव सत्त रूप गरिमा अनंत।
तू त्याग तपस्या भक्तिरूप, तव सुता-तनय भगवंत-संत॥
श्रीहरि होकर तेरे अधीन, तेरे सुत बनते बार बार।
तू अदिति हुई बामन जननी, तेरे यश का क्या वार पार॥
तू राम जननि श्री कौशिल्या, नहिं विश्वनारि जिसके समान।
तू जग जननी नारी महान।

२

तू सन्ध्या अद्भुत ब्रह्मसृष्टि, तेरा यश व्यापा दिग्दिगंत।
बनि अरुन्धती तप की विभूति, जीती कामादिक किया अंत॥
सौ सुत मारे गर्वित कौशिक, उनको न क्रोधकर दिया श्राप।
शुक व्यास पराशर शक्ति फले, फूले वंशज तेरे प्रताप॥
तेरी सेवा करि हुये धन्य, सब अवधनृपति द्विज ऋषि प्रधान।
तू जग जननी नारी महान।

३

अनुसूया बनि दुधमुँहा बना ब्रह्मा हरिहर का हरा मान।
चन्द्रमा ऋषी योगीन्द्रदत्त, मुनि दुर्वासा भे सुत महान॥
सुरपुर से लाकर मंदाकिनि, पतिव्रत असि पर धरदिया शान।
सीता जी के मिस से जग को, दे नारि धर्म का दिव्य ज्ञान॥
तेरे गौरव की गरिमा से, है चित्रकूट गिरिवर प्रधान।
तू जगजननी नारी महान॥

४

जब वेद पाठ करते वचक्नु, उनके मुख से शुभ ऋचारूप।
तू प्रगटी तप विद्या विभूति, सब जग ममत्व करि तुच्छ रूप॥
(शेषांश पृष्ठ ४१ से)

५१६

❀ श्रीमते रामानन्दायनमः ❀

मानस में नारी दीक्षा और
नारी निन्दा

लेखक :—

मानसतत्वान्वेषी पं० श्री रामकुमारदास जी रामायणी
मणिपर्वत श्री अयोध्या जी

योगिराजमहांत स्वामी श्री रणछोरदास जी महाराज
"चित्रकूटी" राजकोट के सम्पूर्ण अर्थ साहाय्य से प्रकाशित।

प्राप्ति स्थान :—

पं० मानसप्रपन्न त्रिपाठी रामायणीय व्यास
ग्राम, सेमर खेड़ी, पो० आगासोद, जिला, सागर (म० प्र०)

मानस में नारी दीक्षा और नारी निन्दा

"मानस में नारी निन्दा" पर तीन महाकाव्य एवं पचीसों खण्ड काव्यों के रचयिता, मानसभाष्यकार विद्या वयो· वृद्ध महाकवि पं० श्री शिवरत्न जी शुक्ल "सिरस" का पत्र—

बछरावाँ, जिला रायबरेली। २०। ४। १९६१ ई०

श्रीमान् पण्डित प्रवर श्रीरामकुमारदास जी।

सादर प्रणाम

आपका लेख "शंकासमाधान" प्रेमसंदेश अङ्क ८ में पढ़ा वास्तवमें आप तत्वान्वेषी हैं वेदों से गोस्वामी जीके कथन का प्रतिपादन करनेमें समर्थ हुए हैं। ऐसे सराहनीय अत्यन्तश्रम साध्य परिश्रम का फल आपको अवश्य मिलेगा।

नारी-नेत्र-कटाक्ष-पराजित-पुरुषों को बोलने का अवसर नहीं रह गया, आपने सत्यही लिखा है कि उग्रनारी जनकेलिये गोस्वामी जी ने लिखा है अन्यथा नय-नत नारी पूजित हैं। आपके पाण्डिय के लिये बधाई है। .... आपने गोस्वामी जी का मुख उज्वल करदिया।

पारमार्थिक विषयक लेख एवं वार्ता का आदर श्रीसर· स्वती जी करतीं हैं। उनके दरबार में साहित्यिक श्रम अङ्कित होजाता है। जैसे राजदरबारमें गवइयेगण एकत्रहोते हैं, परन्तु निश्चित समयमें स्वल्प संख्या ही को गीत गान का अवसर मिलता है। परन्तु राजा सब गीतज्ञों को पुरस्कार देता है। वैसेही चाहे संसार में प्रसिद्धि न मिले परन्तु सरस्वती जी उसे पुरस्कृत करती हैं। फिर आपतो लोक परलोक में आदरित हैं।

दोहा—अपरिचित हू परिचित बनत, गुनि गुन सुजस सुहात।
बसत बाग बेला विपुल, वायु सुगँध लै जात॥

भवदीय (अपरिचित) शिवरत्न शुक्ल "सिरस"

नारी-दीक्षा

पाइ परागहिं जापद पंकज की मम पांशु परी पतिताई।
सामुहे सीय कियो सरनागति स्वामि सियापति सों सुखगाई॥
कीन्ह 'कुमार' कुमारग काटि कथा करुनानिधिकी कविताई।
सो गुरुश्री गुन ग्यान निधान गहें ममप्रेम प्रनाम सदाई॥
श्री गुरु के पद सेव किये उघरे उर अन्तर ज्ञान प्रकाशै।
श्रीगुरु के पद ध्यान किये धन धर्म बढ़े भव रोग विनाशै॥
श्री गुरु के अनुरागत ही पद पावत तीनिहु लोक बिलासै।
श्रीगुरु के पद पंकज की, रज अंजन देत निरंजन भासै॥

राम तजूँ पर गुरु न बिसारूँ। गुरु के सम हरि को न निहारूँ॥
हरि ने जन्म दियो जगमाहीं। गुरु ने आवागमन छुटाहीं॥
हरि ने पाँच चोर दिये साथा। गुरु ने लई छुड़ाइ अनाथा॥
हरि ने कुटुम जाल में घेरी। गुरु ने काटी ममता बेरी॥
हरि ने रोग भोग उरझायो। गुरु योगी करि सबै छुटायो॥
हरि ने मोसूं आप छिपायौ। गुरु दीपक दै ताहि दिखायौ॥
फिरि हरि बन्ध मुक्ति मति लाये। गुरु ने सबही भर्म मिटाये॥

(श्रीसहजोबाई संकलित)

गुरु बिनु भव निधि तरै न कोई। जौं बिरंचि संकर सम होई॥

"गुरु पद पंकज सेवा, तीसरि भक्ति अमान।"

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकाशा॥
नव महँ एकउ जिनके होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥
सो अतिसय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे॥

स्त्रियों को भगवन्मंत्रदीक्षा लेनी चाहिये या नहीं? आज

यह एक विवादग्रस्त विषय बनादिया गया है। इसपर 'चाहिये और नहीं चाहिये' कहने वाले दोनोंपक्ष प्रमाण प्रस्तुत करते है। चाहिये पक्षवालोंने तो 'परमार्थ पत्रिका' का 'गुरु महिमा अंक' विशेषांक ही प्रकाशित कर दिया है। नहीं चाहिये पक्ष वालेभी ग्रंथों में आये प्रकरणान्तर वाक्यों को खींचतान कर "नहीं चाहिये" की पुष्टि का प्रयास किया करते हैं। श्रीरामचरितमानस में अन्य सच्छास्त्रों की तरह ही स्त्रियों के दीक्षा लेने की पुष्टि है अतः यहाँ उसीसे संबंधित कुछ प्रमाण संकलित करदिये जाते हैं। स्मरण रहे कि बहुत सरल अथच सुस्पष्ट श्लोकों एवं श्रुतियों की हिन्दी नहीं दूंगा।

१—विष्णु तत्वं परिज्ञाय एकं चानेक भेदगम्।
दीक्षयेन्मेदिनी सर्वां किं पुनश्चोपसन्नताम्॥

(ना० पाँ)

२—व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

(शुक्ल यजुर्वेद १९। ३०)

३—अग्निर्वै देवानामवमो, विष्णुः परमस्तदन्तरेण सर्वाः अन्या देवताः।

(ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण पंजिका १ अध्याय १ मंत्र १)

अग्नि देवताओं में अवम (छोटा) है, विष्णु परम (श्रेष्ठ) हैं, इसके बीच में और सब देवता हैं।

४—ऋतं वावदीक्षा, सत्यं दीक्षा, तस्मादीक्षितेन सत्यमेव वेदितव्यम्॥

(ऐ० ब्रा०)

५—अग्निर्वै विष्णुश्च देवानां दीक्षा पालौ, तौदीक्षया ईशाते

तौ प्रीतौ दीक्षां प्रयच्छताम । यौ दीक्षयेताम् ॥

(ऐ० ब्रा०)

(ऋग्वेद के निम्न मंत्रों की टीका वेददर्शनाचार्य स्वामी श्री गंगेश्वरानन्दजी ने गुरुमहिमा अंक में प्रकाशित कराई है।

६—यो नो अग्ने अररिवाँ अघायुररातीवा मर्चयति द्वयेन ।
मंत्रो गुरुः पुनरस्तु सो अस्मा अनुमृक्षीष्ट तन्वं दुरुक्तैः ॥

(ऋग्वेद १ । १४७ । ४)

अग्ने:	हे अग्रणी परमात्मन् !
अररिवान	दूसरों के दानादि सत्कार्यों में विघ्न डालने वाला
अरातिवा	स्वयं सत्कार्य न करने वाला
अघायु:	पाप परायण प्राणी
नः	हम (सन्मार्ग गामियों का)
द्वयेन	तन और मन दोनो से
मर्चयति ।	तिरस्कार करता है अर्थात् हमें नीचा दिखाने में सचेष्ट रहता है ।
अस्मै	(षष्ठ्यर्थे चतुर्थी) इसको निन्द्यकार्यों से हटाकर सन्मार्ग में लगाने वाले
मंत्रः गुरुः अस्तु—	मंत्र प्रदाता गुरू जी हों । वे श्रीगुरू जी
दुरुक्तैः	दुर्वचनों से महापुरुषों की निंदा युक्त दुष्ट वाक्यों से दूषित
तन्वम्	इसके शरीर को
अनुमृक्षीष्ट ॥	—अनुमार्जन अर्थात् पावन करैं ॥

७—इमे तुरं मरुतो रामयन्तीमे सहः सहस आनमन्ति ।
इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अररुषे दधन्ति ॥

(ऋ० ७ । ५६ । १६)

इमे गुरु (गुरवः जसोऽलुक्) ये श्रीगुरुदेव जी

मरुतः पवन के समान लोक कल्याण के लिये सतत भ्रमण और पालन करने वाले हैं। वे

तुरम् सेवा में शीघ्र कारी अर्थात् निरंतर गुरु सेवामें तत्पर शिष्य को

रामयन्ति राम में रमण कराते हैं। जैसे मातापिता बालक को विविधिप्रकार के खिलौनों से प्रसन्न किया करते हैं, वैसे विविधि आवश्यक भोग सामग्री को देकर शिष्य के शरीरको सुपुष्ट प्रसन्न और आत्म परमात्म तत्व समझाकर शिष्यके मन को ब्रह्म = राम में रमाते हैं।

इमे ये श्रीगुरु जी

सहः अपने भजनबल दिव्यशक्तिसे

सहसः बलवान, घमण्डी, जगत् पीड़ाकारी, चोर-- दस्यु आदिहिंस्र मनुष्यों को

आ नमन्ति झुका देते हैं अर्थात् दिव्यप्रभावसे कुमार्गगामी प्राणिवर्ग को सन्मार्ग की ओर आकृष्ट करते हैं। संत नानकशाह का कौड़े राक्षसको, पीपा जी का सिंह को, चैतन्यमहाप्रभुका जगाई मधाई को और गौतम बुद्ध का अंगुलिमाल डाकू को प्रभुभक्त बनाना इतिहासप्रसिद्ध है। इतनाही नहीं—

इमे शंसम ये गुरु जी अपने प्रशंसक शिष्य की अर्थात् स्तुति नमस्कार आदिद्वारा गुरु पूजामे निरत साधक को

त्रनुष्यतः हिंसक से—बाह्यक्रूर प्रकृति सिंह मनुष्यादि शत्रुओं से

निपतन्ति निरन्तर रक्षाभी किया करते हैं।

यदि कोई व्यक्ति गुरु सेवासे विमुख है, वह किसी प्रकार भी गुरु सेवा में अपने तन मन धन बचन आदि साधनों का प्रयोग नहीं करता तथा घमंड में चूर रहता है। भक्ति शास्त्र सम्मत गुरु चरणों में आत्मनिवेदन का मार्ग ग्रहण नहीं करता तो—

अरुरुषे—उस आत्मनिवेदन न करने वाले-ढोंगी शिष्य केलिये

द्वेषः— अप्रिय अनिष्ट कोभी यह गुरुदेवजी

दधन्ति—धारण करते हैं अर्थात् शापादि कठोरदण्ड प्रदान द्वारा शिष्यको "चमत्कारको नमस्कार" की उक्ति अनुसार सीधेरास्तेपर लाया करते हैं।

८—न तं तिग्मं च न त्यजो न द्रासदभि तं गुरु।
यस्मा उ शर्म सप्रथ आदित्यासो अराध्वमनेहसो—
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः॥

(ऋ० ८। ४७। ७)

आदित्यासः सूर्य के समान प्रतापी

सप्रथः परोपकृति योग चमत्कारादिसे लब्धख्याति गुरुदेव

अनेहसः निष्पाप सरलहृदयसे आप

यस्मै जिस प्रिय शिष्यकेलिये

शर्म सुख अर्थात् इहामुत्रभोग एवं मोक्ष को

अराध्वम् सम्पादन करें

तम् अभि गुरुम् उस गुरु आज्ञाकारी-गुरुभक्त शिष्यको

तिग्मंचन	तीक्ष्ण स्वभाव वालों को भी
त्यजः, न द्रासद	क्रोध, बुरी तरह नहीं पकड़ता। (द्रा कुत्सायां गतौ) अर्थात् उसके समीप भूल कर भी नहीं फटकता। केवल क्रोधही नहीं क्रोध का कारण काम और काम की अवान्तर जाति लोभ और उनके सहचारी मोह, मद, मत्सर भी
तम् न ह्वासत	उस साधकको आक्रांत नहीं कर पाते। गुरुदेव ! कोटिशः धन्यवाद पूर्वक हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि—
वः ऊतयः	आपके संरक्षण अर्थात् शिष्यरक्षाके प्रकार
सु ऊतयः	सुन्दर संरक्षण हैं।
व उतयः ,,	यह दुरुक्ति पूर्वउक्ति की विशेष पुष्टि के लिये की गई है।

(परमार्थ वर्ष १४ अंक १ से)

गुरु की आवश्यकता एवं महत्ता को बतानेवाली दर्जनों श्रुतियाँ उद्धृत की जा सकती हैं। आस्तिकों के लिये तो उक्त श्रुतियाँ ही आवश्यकतासे अधिक हैं। क्योंकि आस्तिकों को तो एकही वैदिक प्रमाण पर्याप्त होता है।

दीक्षा शब्द की निरुक्ति

१—दीयते चरनं ज्ञानं क्षीयते पापपंजरः।
आब्रह्म भुवनस्याथ तस्माद्दीक्षोच्यतेबुधैः ॥ १ ॥
दिव्यं ज्ञानं यतो दद्यात् कुर्यात् पापस्य संक्षयम्।
तस्माद् दीक्षेति सा प्रोक्ता देशिकैस्तत्व कोविदैः ॥ २ ॥

१०—यथा कांचनतां याति कांस्यं रसबिधानत: ।
तथा दीक्षा बिधानेन द्विजत्वं जायते नृणाम् ॥

११—पितृगोत्री यथा कन्या स्वामिगोत्रेण गोत्रिका ।
तथैव विष्णुमंत्रेण चाच्युत गोत्रेण गोत्रिका ॥

यह तो सार्वजनीन नियम हुआ। अब पाठकगण विशेष रूप से स्त्री दीक्षा के ही सम्बन्ध में पढ़ें। कुछ लोगों ने शातातप स्मृति के नाम से—

यावन्त्यक्षराणि मंत्रादे: स्त्री शूद्रेभ्योदापयेत् ।
तावत्यो ब्रह्महत्यांह: स्वयमाह प्रजापति: ॥

यह श्लोक लिखा है परन्तु कई स्थलों से प्रकाशित शातातप स्मृति में अनेक बार ढूँढने पर भी वह उपर्युक्त श्लोक नहीं मिला प्रत्युत शातातप स्मृति में तो :—

१२—दीक्षितास्त्रीप्रसंगेन जायते दुष्टरक्तदक् ।
स पातक विशुद्ध्यर्थं प्राजापत्यं द्वयं चरेत् ॥

(शा० स्मृ० ५। ३४)

इस श्लोक में "दीक्षितास्त्री" लिखकर जोरदार शब्दों में स्त्री दीक्षा की पुष्टि की गई है। कुछ अन्यत्र के भी प्रमाण—

१३—तांत्रिकेषु च मंत्रेषु दीक्षायां योषितामपि ।
साध्वीनामधिकारोऽस्ति शूद्राणां चैव सद्धियाम् ॥

(हरि भक्ति विलास १—१०)

१४—अगस्त्यसंहितायां श्रीराम मंत्रमुद्दिश्य—
ब्राह्मणान् क्षत्रियान् वैश्यान् स्त्रीः शूद्रान्सास्त्रियोऽपिवा
विष्णुभक्तिरतान् साधून् दीक्षयेद्विधिना गुरु: ॥

१५—पुनश्च:—

शुचिव्रततमा: शूद्रा धार्मिका द्विज सेवका: ।

स्त्रियः पतिव्रताश्चान्ये प्रतिलोमानुलोमजाः ॥
लोकाश्चाण्डालपर्यन्ता सर्वेऽप्यत्राधिकारिणः ॥
(अ० सं० ८ । १५)

१६—क्रमदीपिकायां गोपाल मंत्रमुद्दिश्य:—
सर्वेषु वर्णेषु तथाऽऽश्रमेषु, नारीषु नानाह्वयजन्मभेषु ।
दाता फलानामभिवाञ्छितानि ह्, द्रागेव गोपाल क्रमंत्र एष ॥

१७—बृहद् गौतमीये—
गृहस्था बनगाश्चैव यतयो ब्रह्मचारिणः ।
स्त्रियः शूद्रादयश्चैव सर्वे मंत्राधिकारिणः ॥

१८—बृद्धहारीत स्मृतौ—
ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः स्त्रियः शूद्रास्तथैव च ।
मंत्राधिकारिणः सर्वे ह्यनन्तशरणा यदि ॥ (३ । ६)

१६—(पञ्च संस्कार संग्रहोक्त) पाराशरस्मृतौ—
प्रथमं तापसंस्कारस्तापसैर्मुनिभिः स्मृतम् ।
सर्वाश्रमेषु वसतां स्त्रीणां च द्विजसत्तम ॥

२०—ब्रह्मरात्र प्रकरणे—
विद्याधर ! मनुष्येषु वैश्या शूद्रा स्त्रियोऽन्त्यजाः ।
सर्वेऽधिकारिणोऽप्यत्र विष्णुभक्तो यथा नृपः ॥

२१—रामसार संग्रहे—
स्त्रियश्च वार्षिकेकाले दीक्षयेद् विधिना गुरुः ॥ ७१ ॥

साधक प्रश्नोत्तर मालायाम्—

२२—यो भावयति (पालयति) यासूते येन विद्योपदिश्यते ।
जेष्ठो भ्राता च भर्ता च पंचैते गुरवः स्मृतः ॥

२३—मंत्रेणान्तविशुद्धिश्च, पतिसेवा सहायता ।
पत्युश्च सेवया मुक्तिरित्यर्थं मंत्रसेवनात् ॥

२४—सभर्तृका वा विधवा विष्णुभक्तिं करोति या।
समुद्धरति चात्मानं कुलमेकोत्तरं शतम् ॥
(ब्रह्माण्ड पुराणे)

आपस्तम्बसूत्रे—

२५—ब्राह्मणो वा एष जायते यो दीक्षते, तस्माद्राजन्यवैश्या अपि ब्राह्मणा इत्येवावेदयति।

अर्थ—जो कोई भी वर्ण दीक्षा लेता है वह ब्राह्मण हो जाता है। इसीसे क्षत्रिय वैश्यों को भी दीक्षा लेने पर ब्राह्मण वह देना आवेदन (मुनादी) करता है।

(साधक प्रश्नोत्तर माला के लेखक एवं प्रकाशक हैं पं० श्रीरामहरिदासजी शास्त्री, शाहजहाँपुर वाटिका, रमणरेती, वृन्दावन।)

२६—मंत्रसंस्कारसिद्धयर्थं मंत्रदीक्षाविधिं तथा।
उद्वाहसमये स्त्रीणां पुंसां चैवोपनायने ॥
(पराशरस्मृति उत्तर खण्ड १। २२)

२७—ब्रह्मक्षत्रविशः शूद्राः स्त्रियश्चान्तरजास्तथा।
सर्व एव प्रपद्येरन् सर्वधातारमच्युतम् ॥

२८—न जाति भेदं न कुलं न लिंगं न गुणक्रियाम्।
न देशकालौ नावस्थां योगो ह्ययमपेक्षते ॥
(भारद्वाज संहिता १। १४। १५)

२९—ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो नारी तथेतरः।
चक्राद्यैरंकयेद् गात्रमात्मीयस्याखिलस्य च ॥
(भारद्वाज सं० ३। ५१)

३०—तस्माच्चक्रं विधानेन तप्तं वै धारयेद् द्विजः।
सर्वाश्रमेषु वसतां स्त्रीणां श्रुतिनोदनात् ॥
(वृद्धहारीत स्मृति २। २३)

गोतमीतंत्र प्रथमाध्याय में गौतमजी ने नारद जी से प्रार्थना किया कि—

३१—भगवन् ! कामदा मंत्रा शूद्रास्त्र्याद्यधिकारक: ।
येन सर्वफलावाप्तिः सर्वेषां बन्धुरेव च ॥ ६ ॥
सर्व वर्णाधिकारश्च नारीणां योग्य एव च ।
तं ब्रूहि भगवन्मंत्रं मम सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥

३२—नारद पांचरात्रीय जयाख्य संहिता के सोलहवें पटल में नारदजी ने भगवान से प्रार्थना किया कि—
श्रोतुमिच्छामि भगवन् ! दीक्षा लक्षणमुत्तमम् ।
नैष्ठिकानां तथा स्त्रीणां शिशूनां भावितात्मनाम् ॥१॥

इस पर बड़े विस्तार से सारी बिधि बताकर भगवान ने कहा कि—

३३—अविरुद्धांस्तथाऽक्लिष्टान स्त्रीं बालानां च नारद ।
स्त्रीणां विशेषतो दद्यात् पतिभक्तिसमन्वितान ॥
(ना० पां० रा० ज० सं० पट० १६ श्लो० ३३०)

३४—पुरुषं वा स्त्रियं वापि दीक्षयेत् सूर्यमण्डले ॥
(भविष्य पुराण ब्राह्मखण्ड १४१ । २२)

३५—नास्ति येषां गुरुर्नॄणां नारीणां वापि मंत्रदः ।
न तेषां वदनं वीक्ष्ये गतिश्चैषां न विद्यते ॥
(शा० तं० ४ । ६७)

३६—यद्यदीक्षारतास्तास्तु देया दीक्षा तदा प्रभो ।
(रुद्रयामल २८ । ४८)

३७—स्त्रिया सहैव कर्तव्यं गृहस्थस्य विधानतः
संस्कारपंचकं येन भवेत् सा धर्मचारिणी ॥
(वृहद् ब्रह्मसंहिता)

आवश्यकता पड़नेपर यह प्रमाण सूची और भी बढ़ाई जा सकती है। हिन्दी जगत में आध्यात्मिक कहानी के एकमात्र लेखक एवं किसी भी तथ्य को सुलझे दिमाग से विचार करने वाले ठाकुर श्री सुदर्शन सिंह "चक्र" ने इस विषयपर बहुत विस्तार से पूर्वोक्त "गुरुमहिमा अंक" में लिखा है। जिसका कुछ अंश यह है—"स्मृति वचन में स्त्री-शूद्रादि को मंत्र दीक्षा का जो स्पष्ट निषेध है उसकी संगति क्या है? क्योंकि परम्परा तथा अन्य बातें तो स्त्री दीक्षा के पक्ष में हैं। यहाँ यह बात भूलने योग्य नहीं है कि वेद में स्त्री शूद्र तथा अन्त्यज, म्लेच्छादि का अधिकार हिन्दू शास्त्र नहीं मानते और मूल संहिता के वचन मंत्र ही कहलाते हैं। अतएव स्मृति का उपरोक्त वचन केवल वैदिक मंत्र की दीक्षा स्त्री शूद्रादि को न देने का विधान करता है, ऐसा मानना चाहिये। वैदिक-मंत्र गायत्री आदि की दीक्षा स्त्री-शूद्रादि को देने में बहुत दोष है, यह स्मृति वचन का तात्पर्य है। वेद मंत्रों से भिन्न पुराण तथा तंत्र के जो मंत्र हैं उनकी दीक्षा तथा भगवन्नाम मंत्रों की दीक्षा स्त्री-शूद्रादि को दी जासकती है। इस विषय में परम्परा प्रमाण तो है ही। वैष्णव परम्परा में मीरा सहजो आदि के समान अनेक स्त्री संत हुई हैं। उन्होंने गुरु बनाये थे और दीक्षा प्राप्त की थी। गोस्वामी श्री तुलसीदास जी शास्त्रीय मर्यादा के कट्टर समर्थक हैं। वे किंचित् भी मर्यादा का भंग पसंद नहीं करते थे और उनका श्रीरामचरित मानस शास्त्र ही है। उसी श्रीरामचरित मानस में भगवान मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम शबरी जी को उपदेश करते हुये कहते हैं—

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा। पंचम भजन सो वेद प्रकाशा॥

यह भक्ति नवधा भक्ति में पंचम भक्ति का केवल वर्णन

ही नहीं है। यह भक्ति शबरी जी में है, इसे श्रीरघुनाथ जी ने ही स्वीकार किया है—

नवमहँ एकउ जिन्हके होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥
सो अतिशय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे॥

'नव महँ एकउ' अर्थात् यह पंचम भक्ति मंत्र जप भी 'नारि पुरुष सचराचर' के अधिकार की है यह बात भी यहाँ कहदी गई है। इसी प्रकार श्रीरामचरितमानस के उत्तर काण्ड में जब महाराजाधिराज श्रीराघवेन्द्र प्रजाको उपदेश करने लगे हैं तब भी 'मंत्र जप' को उन्होने सबके लिये भक्तिबतलाया है। तंत्र शास्त्र तो और भी चार पद आगे है। तंत्रों में स्त्रीदीक्षा प्रसंग में यह बात स्पष्टरूप से कही गयी है कि स्त्री गुरु से प्राप्त मंत्र अधिक प्रभावशाली होता है और शीघ्र फलदेता है। लेकिन दीक्षा तो वही देगा जो स्वयं किसी से दीक्षा प्राप्त कर चुका हो।

मंत्र-जप के आदेश का अर्थ गुरुबनाना नहीं होता, यह तर्क आप करें तो यह कुतर्क ही माना जायगा; क्योंकि सर्वत्र शास्त्रों में सुनकर या पढ़कर मंत्र का जप निष्फल कहागया है। जपके लिये दीक्षा की अनिवार्य आयश्यकता बताया गया है। पारमार्थिक साधना का अधिकार स्त्री को भी उतना ही है जितना पुरुष को। अतः स्त्री के लिये भी गुरुबनाने की आवश्यकता है और वह ऐसा करे, इसमें कोई शास्त्र वाक्य वाधक नहीं है।"

अब बहुत प्रसिद्धि प्राप्त अर्थात् प्रसिद्धतम दीक्षिता स्त्रियों में कुछ का नाम पढ़ लीजिये।

श्रीशंकरजी ने अपनी पत्नी पार्वतीजी को भगवन्मंत्र

ग्रहण करने की आज्ञा दिया कि—

१—व्रतं कुरु महाभागे त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
तस्माद्गृहाण गिरिजे ! हरेर्मंत्रं सुदुर्लभम ॥
(ब्रह्मवैवर्तपुराण गणपति खंड ३ । ३६)

इसे पद्मपुराण के उत्तर खण्ड अध्याय २५४ में श्रीवशिष्ठ जी ने राजा दिलीप को कुछ विस्तारके साथ बताया है। देखिये-

रुद्र उवाच—

गुरूपदेश मात्रेण पूजयित्वैव केशवम् ।
प्राप्नोति वांच्छितं सर्वं नान्यथा भूधरात्मजे ॥ ७ ॥

वशिष्ठ उवाच—

एवमुक्ता तदा देवि वामदेवान्तिकं नृप ।
जगाम सहसा हृष्टा विष्णुपूजनलालसा ॥ ८ ॥
समेत्य तं गुरुं देवी पूजयित्वा प्रणम्य च ।
विनीता प्रांजलिर्भूत्वा उवाच मुनिसत्तमम् ॥ ९ ॥

पार्वत्युवाच—

भगवँस्त्वत्प्रसादेन सम्यगाराधनं हरेः ।
करिष्यामि द्विजश्रेष्ठ त्वमनुज्ञातुमर्हसि ॥ १० ॥

वशिष्ठ उवाच—

इत्युक्तस्तु तदा देव्या वामदेवो महामुनिः ।
तस्यै मंत्रवरं श्रेष्ठं ददौ सविधिना गुरुः ॥ ११ ॥

२—भागवत स्कंध ४ अ० ३ श्लो० १३ में सतीजी ने शिवजी से प्रार्थना किया कि—

कथं सुतायाः पितृगेहकौतुकं, निराम्य देहः सुरवर्य नेंगते ।
अनाहुता अप्यभियान्ति सौहृदं, भर्तुर्गुरुर्देहकृतश्च केतनम् ॥

यहां पति, गुरु और पिता इन तीनों के घर बिना बुलाये

जाने को धर्म सम्मत कहती हैं । स्त्री को गुरु बनाना निषिद्ध होता तो गुरु के घर जाना कैसे कहतीं ? मानस में इसका अनुवाद है—

जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा । जाइय बिनु बोले न सँदेहा ॥

४—वाल्मीकीय रामायण में महाराज श्रीदशरथजी के साथ कौशल्या आदि रानियों का दीक्षा लेने का स्पष्ट वर्णन है—

ततः गत्वा ताः पत्नी नरेन्द्रो हृदयंगमाः ।
उवाच दीक्षां विशत यक्ष्येऽहं सुतकारणात् ॥
(वा० रा० १ । ८ । २४)

यज्ञवाटं गताः सर्वे यथा शास्त्रं यथाविधिः ।
श्रीमाँश्च सह पत्नीभि राजा दीक्षामुपाविशत ॥
(वा० रा० १ । १३ । ४०)

५—कुमारी कन्याओं के मंत्र दीक्षा लेने का प्रमाण । पार्वतीजी ने विवाह के पहले कुमारीपनमें ही नारद जी से शिवमंत्र की दीक्षा लिया था शिवपुराण रुद्र संहिता पार्वतीखण्ड अध्याय२१

पार्वत्युवाच—त्वंतु सर्वज्ञ जगतामुपकारकर प्रभो
रुद्रस्याराधनार्थाय मंत्रं देहि मुने हि मे ॥ ३१ ॥
न हि सिद्ध्यति क्रिया कापि सर्वेषां सद्‌गुरुं विना
मया श्रुता पुरा सत्या श्रुतिरेषा सनातनी ॥३२॥
इति श्रुत्वा बचस्तस्याः पार्वत्या मुनिसत्तमः ।
पंचाक्षरं शम्भुमंत्रं बिधिपूर्वमुपादिशः ॥ ३३ ॥

६—पृथा (कुन्ती) जब कुमारी कन्याथीं तब दुर्वासाजी ने उन्हें मंत्र दिया था । देखिये महाभारत १ । ११०

तस्यै स ददौ मन्त्रमापद्धर्मान्ववेक्षया ॥ ६ ॥

७—तस्मात् सर्वप्रदो मंत्रः सोऽयं पंचाक्षरः स्मृतः ।
स्त्रीभिः शूद्रैश्चै संकीर्णैर्धार्यते मुक्तिकांक्षिभिः ॥

अतः सद्गुरुमाश्रित्य प्राप्तोऽयं मंत्र नायकः ।
पुण्यक्षेत्रेषु जप्तव्यः सद्यः सिद्धिं प्रयच्छति ॥ २० ॥

८—इसी अध्यायमें कथा है कि—पुराकाल में मथुरा नरेश दाशार्ह का ब्याह काशी नरेश ने अपनी कन्या कलावती के साथ कर दिया; राजा दाशार्ह ने रानी कलावती का अंग बलात् स्पर्श किया तो वह तप्तलौह पिंडवत् जलता मालूम पड़ा तो राजा ने कारण पूँछा कि—

कथमग्निसमं जातं वपुः पल्लवकोमलम् ॥ ४३ ॥

रानी ने बताया कि—

राजन् ! मम पुरा बाल्ये दुर्वासा मुनिपुङ्गवः ।
शैवीं पंचाक्षरीं विद्यां कारुण्येनोपदिष्टवान् ॥ ४५ ॥

इसी गुरु मंत्र के प्रभाव से पापी मुझे स्पर्श नहीं सकते और आप मद्यपान पर स्त्री एवं वेश्या गमन, मांस भक्षण, मिथ्या भाषण आदि पापों से दूषित हैं, नित्य स्नान नहीं करते, ईश्वराराधन मन्त्र जप भी नहीं करते तब मुझे कैसे छू सकते हैं। ऐसा सुनकर जब राजा ने रानी से ही मन्त्र दीक्षा देने की प्रार्थना किया तो रानी ने कहा कि—

नाहं तवोपदेशं वै कुर्यां मम गुरुर्भवान ।
उपातिष्ठ गुरुं राजन् गर्गं मंत्रविदांवरम् ॥ ५० ॥

इतिसंभाषमाणौ तौ दम्पती गर्गसन्निधिम् ।

प्राप्य तच्चरणौ मूर्ध्ना ववन्दाते कृतांजली ॥ ५१ ॥
गुरुवर्यमनुप्राप्य मुदितौ तौ च दम्पती ॥ ६६ ॥

अतः पति पत्नी में परस्पर एकदूसरे को मंत्रदीक्षा नहीं देनी चाहिये, और स्त्रियों को पिता से भी मंत्र दीक्षा नहीं लेनी चाहिये। देखिये ब्रह्मवैवर्तपुराण ब्रह्मखण्ड अध्याय २५

पत्युर्मंत्रं पितुर्मंत्रं न गृह्णीयाद्वै विचक्षणः ॥ ४३ ॥

(अतः सद्गुरुमाश्रित्य ग्राह्योऽयं मंत्रनायकः ।)

सधवा स्त्रियाँ तीर्थव्रत उपवास दान मंत्रदीक्षा आदि समस्त कार्य पति से आज्ञा लेकर करैं—

स्त्रीभिर्वा भर्तृवाक्येन कर्तव्यं धर्मवर्द्धनम् ।
विधवाभिश्च कर्तव्यं मोक्षसौख्यातिवृद्धये ॥

स्कन्दपुराण वैष्णवखण्ड कार्तिक माहात्म्य ३२।५३

गौतमी तंत्र अध्याय १ में गौतमजी ने नारदजी से पूँछा—

६—भगवन् कामदा मन्त्रा स्त्रीशूद्राद्यधिकारकाः ।
येन सर्वफमावाप्तिः सर्वेषां बंधुरेव यः ॥ ६ ॥
सर्ववर्णाधिकारश्च नारीणां योग्य एव च
तं ब्रूहि भगवन्मन्त्रं मम सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥

ऐसेही भगवान से नारद जीने भी पूंछा था । देखिये नारद पाँचरात्रीय जयाख्य संहिता पटल १६ वां—

१०—श्रोतुमिच्छामि भगवन् ! दीक्षालक्षणमुत्तमम् ।
नैष्ठिकानां तथा स्त्रीणां शिशूनां भावितात्मनाम् ॥ ३ ॥

उत्तर—ब्राह्मणादौ च वर्णानां समयाः पुत्रकात्मनाम् ।
साधकानां गुरूणां च येभ्यो मध्यात्सुखप्रदान् ॥३२६

अविरुद्धाँस्तथाऽक्लिष्टान स्त्रीबालानां च नारद ।
स्त्रीणां विशेषतो दद्यात् पतिभक्तिसमन्वितान ॥३३ ॥

हाँ पुरुषों की तरह स्त्रियों के लिये न्यास पूजन आदि का बंधन नही है, मन्त्र जप मात्र की प्रधानता है । देखिये मंत्रहार्णव

यदि पूजाद्यशक्ता स्याद् द्रव्याभावेन सुन्दरि ।
केवलं जपमात्रेण पुरश्चर्या विधीयते ॥
नियमः पुरुषे ज्ञेयो न योषित्सु कदाचन ।

न न्यासा योषितानां च न ध्यानं न च पूजनम् ॥
केवलं जपमात्रेण मंत्रा सिद्ध्यन्ति योषिताम् ।............
..... मृगीदृशी विशेषेण मन्त्रा ये ते सुसिद्धिदाः ॥
ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्रा नार्योऽधिकारिणः

११—दक्षिणापथ के बाष्कल ग्राम में रहने वाली 'बन्दुला नाम्नी पतिता ब्राह्मणी की कथा वर्णित है, जिसने गुरु दीक्षा लेकर अपना और अपने पति का उद्धार किया उसकी कथा स्कंध पु० ब्रह्मोत्तर खण्ड अध्याय २२ श्लोक ४६ से १३० तक विस्तार से है।

इत्थं सद्गुरुमाश्रित्य सा नारी प्राप्त सन्मतिः ।
दध्यौ मुहुर्मुहुः शम्भोश्चिदानन्दमयं वपुः ॥ १०३ ॥

गुरुसुश्रूषणरता त्यक्तापत्य सुहृज्जनाः ।
गुरूपदिष्टयोगेन शिवमेवमतोषयत् ॥ १०६ ॥

१२—ब्रह्मवैवर्त पुराण के चतुर्थ श्रीकृष्ण जन्म खण्डान्तर्गत नहुषोपाख्यान के इन्द्र दर्पभंग वर्णनाध्याय में वर्णन है कि नहुष के कारण उपस्थित महाविपत्ति के समय इन्द्राणी शची ने अपने गुरु की कृपा से निस्तार पाया—

शोकार्णवे निमज्जन्ती हृदयेन विदूयता ।
तुष्टाव भीता स्वगुरुं ब्रह्मिष्ठं च कृपानिधिम् ॥ १३८ ॥
मंत्राद्युद्गारिणो नैव गुरुरित्युच्यते बुधैः ।
अन्यो वन्द्यो गुरुरयमन्यश्चारोपितो गुरुः ॥ १४६ ॥
अदीक्षितस्य मूर्खस्य निष्कृतिर्नास्ति निश्चितम् ॥ १४८ ॥
मंत्रो विद्या गुरुर्देवः पूर्वलब्धो यथा पतिः ।
प्रतिजन्मनिबन्धेन सर्वेषामुपरिस्थितः ॥ १५६ ॥
पितागुरुश्च वन्द्यश्च यत्र जन्मनि जन्मदः ।
गुरवोऽन्ये तथा माता गुरुश्च प्रतिजन्मनि ॥ १६० ॥

१३—शबरीजी के गुरु मतंगजी थे, शबरीजी ने गुरु सेवा किया था, वे मंत्र जप करती रहीं इसकी पुष्टि तो रामचरित मानस में श्रीरामजी के वाक्यों के उद्धरण हैं जो कि श्रीरामजी ने शबरी से कहा था—

गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भक्ति अमान।
मंत्र जाप मम दृढ़ बिश्वासा। पंचम भजन सो वेद प्रकाशा॥
सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे।' वक्ताओं ने भी कहा है कि—
शबरी देखि राम गृह आये। गुरु के बचन समुझि जिय भाये॥

१४—श्रीनारदजी ने दैत्येन्द्र हिरण्यकश्यप की रानी, प्रह्लादजी की माता कयाधू को मंत्र दीक्षा दिया था। (देखिए महाभारत)

१५—नारदजी ने राजा कास की रानी को मन्त्र दीक्षा दिया था। (विश्राम सागर)

१६—नारदजी ने पं० कृष्णदत्त शर्मा की पत्नी श्रीमती सुन्दरी देवी को मन्त्र दीक्षा दिया था। विश्राम सागर)

१७—महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय का इतिहास साक्षी है कि श्रीज्ञानेश्वर की छोटी बहन श्रीमुक्ताबाई ने महात्मा श्रीनिवृत्तिनाथ से दीक्षा लिया था।

१८—जगद्गुरु भगवान् आदि शंकराचार्यजी ने मीमांसक शिरोमणि श्रीमण्डन मिश्र की विदुषी पत्नी को दीक्षा दिया था। (शंकर दिग्विजय)

१९—जगद्गुरु भगवान् श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज ने गागरौन गढ़ाधीश श्रीपीपाजी की रानी को मन्त्र दीक्षा दिया था। (श्रीरामानानन्द दिग्विजय)

२०—उक्त आचार्य ने ही श्रीसुरसुरानन्दाचार्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुरसुरीदेवी को मन्त्र दीक्षा दिया था। (भक्तमाल तथा महाभागवत चरित)

२१—चित्तौड़ गढ़ाधीश्वरी झाली रानी और चित्तौड़ेश की पुत्र बधू महाराणा श्रीप्रतापसिंह जी के पिता महाराणाउदय-सिंह की अनुजबधू बिश्वबिख्यात श्रीगिरिधरगोपाल प्रिया श्रीमीराजी ने महात्मा श्रीरैदासजी से मन्त्र दीक्षा लिया था। (भक्त माल)

आज भी चित्तौड़ के मीरा मन्दिर में श्रीरैदासजी की छत्री और चरण पादुका स्थापित है।

२२-२४—ओरछाधीश श्रीमधुकरशाहजी की रानी श्रीमती गणेशदेईजी और आमेर की रानी श्रीमती रत्नावतीजी का मन्त्र दीक्षा लेना भक्तमाल में ही प्रसिद्ध है। सहजोबाई, दया बाई और रानी सुन्दरिकुँवरि आदि की दीक्षा इतिहास प्रसिद्ध है। प्रमाणों की कमी नहीं है परन्तु आस्तिक के लिये दो दर्जन प्रमाण कम नहीं हैं।

जिन लोगों ने शातातप के नाम से कल्पित श्लोक दिया है उन्होंने विरक्त साधुओं के परमाचार्य-शैवाचार्य श्रीशंकरा-चार्यजी तथा श्रीवैष्णवाचार्य श्रीरामानन्दाचार्यजी, महात्मा रैदासजी तथा देवर्षि नारदजी तक को स्त्रियों को मन्त्र देने के कारण अनेक ब्रह्म हत्या का अपराधी प्रकारान्तर से सिद्ध करने की दुश्चेष्टा किया है। यद्यपि वे आचार्यगण तो अपराधी नहीं हो सकते हैं परन्तु नियमानुसार किसी पर मिथ्या दोषारोप करने वाला आरोपक ही उस अपराध का दण्ड भागी हो सकता है। अस्तु वैदिक श्रुति कहती है कि—

स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।

(मुं० ब० १।२।१२)

अर्थात् केवल कोरा विद्वान् गुरु होने का अधिकारी नहीं है और केवल भक्त गुरु हो पर विद्वान न होतो शिष्य की

शंकाओं का समाधान न कर सकने के कारण दीक्षादेने का पूर्ण अधिकारी नहीं, अतः श्रोत्रिय अर्थात् वेदज्ञ और ब्रह्मनिष्ठ अर्थात् भगवद्भक्त से ही मंत्र दीक्षा लेनी चाहिये। यथा—

आचार्यो वेदसम्पन्नो विष्णुभक्तो विमत्सरः।
एवं लक्षण सम्पन्नो गुरुरित्यभिधीयते॥

(अद्वयतारकोपषित् ८)

शरणागति धर्म और स्त्री समाज (प्रथम भाग) में भी थोड़ासा संग्रह है उसके भी चार उद्धारण देखिये—

१—नारायणोऽपयाति गुरोः प्रच्युतस्य दुर्बुद्धेः।
कमलं जलादपेतं शोषयति रविर्न तोषयति॥ (जप०सं०)

गुरु द्रोही पर भगवान वैसेही अप्रसन्न होजाते हैं जैसे जल से अलग हुये कमल को सूर्य जला देते हैं।

२—गुरुर्येन परित्यक्तस्तेन त्यक्तः पुरा हरिः। (ब्र० वै० पु०)

३—ते नराः पशवो लोके किं तेषां जीवने फलम्।
यैर्न दीक्षा हरेर्लब्धा नार्चिता हि जनार्दनः॥ (स्कं० पु०)

४—अदीक्षिता ये कुर्वन्ति जपपूजादिकाः क्रियाः।
न भवन्ति प्रिये! तेषां शिलायामुप्तबीजवत्॥
अदीक्षितस्य वामोरु! कृतं सर्वमनर्थकम्।
पशुयोनिमवाप्नोति दीक्षा हीनो मृतो नरः॥ तंत्र॥

उक्त पुस्तक के लेखक हैं श्री ब्रजबल्लभशरण जी वेदान्ताचार्य, पंच तीर्थ, संपा० सर्वेश्वर वृन्दावन। कितने दुरभिसंधिक-लोग भाई बहिन का नाता मानकर दम्पति को एक गुरू से दीक्षा न लेकर "पतिरेकोगुरुः स्त्रीणाम्" कहकर स्त्री को पति से ही दीक्षा लेना विहित कहते हैं पर वे नहीं सोचते कि मंत्र दाता गुरु और मंत्र ग्राहिका शिष्या में पिता और पुत्री का पवित्रतम

सम्बन्ध हो जाता है। जो कि भूलकर भी या भ्रम में किंवा विनोद में भी पति पत्नी में न होना चाहिये। पिता पुत्र व पुत्री का मुख्य सम्बन्ध तीन तरह का शास्त्र एवं लोक में ख्यात है।

१—औरस, २—दत्तक और ३—दीक्षित अतः पति तो शिक्षक हो सकता है दीक्षक नहीं। और—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवोमहेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परंब्रह्म गुरुरेव परागतिः॥ (अद्वै० ता० उ०)

इस औपनिषदिक श्रुति की आज्ञानुसार परब्रह्म स्वरूप होने से एक गुरु से दीक्षा लेना दांपत्य का बाधक नहीं अपितु दोनों अर्द्धांगों को एक गुरु से मंत्र दीक्षा लेना उभयांगों को एकत्व प्रदान करके दाम्पत्य का परम साधक है। इसीसे यज्ञ में दम्पति (पति-पत्नी) को एक साथ ही दीक्षित होने का वैदिक नियम ख्यात है।

लगे हाथ एक और असम्बद्ध प्रलाप का समाधान करदं ता० ५ जून १९५४ ई० को उदयपुर में पिछोला तालाब (झील) के किनारे शाम को मैं टहल रहा था। मेरे साथ पं० सुरेन्द्रनाथ 'बेधड़क' मानस प्रेमी और राजस्थान बैंक (उदयपुर) के असिस्टेण्ट मैनेजर पं० हरिनारायण शर्मा और उनकी पत्नी अ० सौ० मोहनी देवी भी थीं। उस समय बेधड़क जी ने कहा कि—एक बार पं० राजाराम पांडे 'मंजुलजी' का चरण उनकी शिष्यायें स्पर्श करने लगीं तो मैं (बेधड़क) ने मंजुलजी को बहुत फटकारा, वेइज्जत किया, वे समाज में बड़े लज्जित हुये आदि आदि। मैंने बेधड़कजी को बतलाया कि पं० मंजुलजी तो शिखासूत्र त्यागी सन्यासी नहीं हैं तब आपने उन्हें क्यों फटकारा। स्त्री स्पर्श निषिद्ध तो संन्यासियों के लिये है, दूसरों के

लिये बन्धन नहीं है पर संन्यासियों के लिये तो बहुत कड़ा बन्धन है।

पदापि युवतीं भिक्षुर्न स्पृशेद् दारवीमपि ॥(भाग. ११।८।१३)

संन्यासी तो काष्ठ तक की स्त्री को पाँव से भी स्पर्श न करै ; किसी युवती को अपना कोई अंग न छूने दे। उन्हीं बेधड़कजी को ६ जून १६५० ई० को ही फतेहनगर में स्त्रियों मारवाड़िनों से पाँव स्पश कराते देखा। ऐसे अनेक लोग—

मनस्यन्यद् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यत्—हैं जो स्त्री पक्षपात का मिथ्या दम्भ दिया करते हैं। उन्हें श्रीरामचरितमानस ध्यान पूर्वक देखना अध्ययन करना चाहिए। रामायणमें अनेक पतिव्रता स्त्रियोंका अनेक ऋषियों, गुरुओं और ब्राह्मणों का पाँव स्पर्श करना पाँवपखारना, पाँवपूजन, पाँवकी धूलि लेना आदि वर्णित है इसमें न तो किसी स्त्री का पातिव्रत भंग होना कहा कहा गया है और न किसी ऋषि, मुनि या ब्राह्मणादि का व्रत भंग होना ही। कुछ प्रमाण देखिये—

१—नारि सहित मुनि पद सिर नावा।

२—सुना बोलि मेली मुनि चरना॥

नारदजी विरक्त तो थे पर शिखा सूत्र त्यागी भिक्षु (संन्यासी) नहीं थे और मैना तथा पार्वती जी का व्रतशील भी भंग नहीं हुआ।

३—सीय बोलाइ प्रनाम करावा।

परशुरामजी भिक्षु सन्यासी नहीं थे और कुमारी सीता जी का शील भंग नहीं हुआ।

४-गुरु आगमन सुनत रघुनाथा…गहे चरन सिय सहित बहोरी॥

५—बधुन समेत कुमार सब रानिन सहित महीस।
पुनि पुनि बंदत गुरु चरन देत असीस मुनीस॥

६—सीय आय मुनिवर पग लागीं।

बशिष्ठजी भिक्षु-संन्यासी नहीं थे और रानियों तथा बधुओं का पातिव्रत भी भंग नहीं हुआ।

७—भूसुर बृन्द देखि बड़ि रानी। सादर उठीं भाग्य बड़ि जानी॥
पाँय पखारि सकल अन्हवाये।

वे भूसुर ब्राह्मण गण संन्यासी नहीं थे और उनका पाँव पखारने आदि से अवधेश की बड़ी रानी कौशिल्याजी का पातिव्रत भी भंग नहीं हुआ।

'बहु बिधि कीन्ह गाधि सुत पूजा' 'रानिन सहित लीन्ह पग धूरी'
भीतर भवन दीन्ह बरबासू। मन जोगवत रह नृप रनिवासू॥

महर्षि विश्वामित्रजी विरक्त तो थे परन्तु भिक्षु संन्यासी शिखा सूत्र त्यागी नहीं थे। रानियों का भी पातिव्रत भंग नहीं हुआ।

बूढ़ो महाप्रमानिक ब्राह्मन संकर नाम सुनायो।
सँग सिसु सिष्य सुनत कौशिल्या भीतर भवन बुलायो॥
पाँय पखारि पूजि दियो आसन॥ (गीतावली)

बूढ़े ब्राह्मण ज्योतिषी शंकर शर्मा और उनके शिष्य विद्यार्थी रूपमें (काकर्षि) भुशुण्डि शर्मा संन्यासी नहीं थे। और ब्राह्मण का पाँव पूजने से कौशल्याजी का पातिव्रत भंग नहीं हुआ।

१०—सीय आइ मुनिवर पगलागी।

११—प्रयाते तु सहस्राक्षे राघवः स परिच्छदे।
अग्निहोत्रमुपासीनं शरभंगमुपागमत्।
तस्य पादौ तु संगृह्य रामः सीता च लक्ष्मणः॥
(वा० रा० ३। ५। २६)

ये थोड़े से प्रमाण रामायण कालीन पतिव्रता शिरोमणि द्वारा साधु ब्राह्मण पद प्रक्षालन के हैं। महाभारत एवं पुराणों के प्रमाण पुंज उद्धृत करने से एक स्वतंत्र पुराण बन सकता।

है। इसी तरह साध्वी स्त्रियों को भगवद्भक्ति एवं भगवत्प्रतिमा; शिव, शालग्राम पूजने आदि के प्रचुर प्रमाण पुराणों में हैं परन्तु लेख बढ़ जाने के डर से यहाँ संकेत भी नहीं किया जा रहा है। लेखकों से अनुरोध है कि अपने मन से चाहे जो लिखा करें। (मुखमस्तीति वक्तव्यं दशहस्ता हरीतिकी।)

परन्तु किसी महर्षि के नाम से मिथ्या प्रमाण गढ़कर धर्मारूढ़ श्रद्धालुओं को पथ भ्रष्ट करने की दुश्चेष्टा न करें।

मानस में नारी निन्दा

शंका—

श्रीरामचरितमानस के नाते गोस्वामी श्री तुलसीदासजी की देशविदेश में बड़ी प्रतिष्ठा है और उन्होंने सर्वत्र ही 'मुनि-पुराण बुध वेद' आदि की दुहाई देकर अपने कथन की पुष्टि की है, परन्तु कई जगह उग्रनारी निन्दक के रूपमें हमारे सामने आते हैं। जैसे—

१—कत बिधिसृजी नारि जगमाहीं। पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

२—निज प्रतिबिंब बरुक गहि जाई। जानि न जाइ नारि गति भाई॥

३—बिधिहु न नारि हृदय गति जानी। सकल कपट अघ अवगुन खानी

४—भ्राता पिता पुत्र उर गारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी।
होइ विकल सक मनहि न रोकी। जिमि रविमनि द्रव रविहिं बिलोकी

५—राखिय नारि यदपि उर माहीं। युवती शास्त्र नृपति. बश नाहीं॥

६—अवगुन मूल सूल प्रद प्रमदा सब दुख खानि।

७—ढोल गंवार सूद्र पसु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी।

८—नारि स्वभाव सत्य कवि कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥
साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक असौच अदाया॥

आदि आदि पढ़कर विद्वत् समाज में क्षोभ होना स्वभाविक है। जिज्ञासा उठती है कि तुलसीदास जी की इस घोर नारी निन्दा का क्या कारण है। नारी निन्दा तो किसी भी वेद बुध को अभीष्ट नहीं हो सकती।

समाधान

सीतारामकथाकारं सीतारामप्रजापकम्।
रामानन्दान्वयं नित्यं हुलसीनन्दनं नुमः॥

भारत में एक समय था जब "मातृ देवो भव, पितृ देवो भव" (तै० उ० १ । ११) की शिक्षा दी जाती थी और लोग तदनुकूल चलते थे । परन्तु आज "नारि विवश नर सकल गोसाईं" तो हैं ही, शिक्षा भी जाती है कि—

'पत्नी को परमेश्वर मानो । साले को पैग़म्बर जानो ॥

(पं० गोपाल प्रसाद व्यास)

अतः आज जो विदेशी शिक्षा से शिक्षित-दीक्षित लोग येनकेन प्रकारेण नारि-प्रशंसा पर तुले हुए हैं । वेही लोग ऐसी ऐसी कुतर्कणायें पैदा करते रहते हैं कि 'तुलसीदास घोर नारी निन्दक थे उन्होंने ऐसा लिखा, वैसा लिखा, ऐसा क्यों लिखा, ऐसा क्यों नहीं लिखा ?" इस पर अनेक विद्वान एवं विदुषियाँ अनेक सत्तर्कों से बातुलों की कुतर्कों का खण्डन करते रहते हैं। वे कुतर्कणायें किसी विदुषी नारी ने नहीं उठाईं न कोई विदुषी नारी उठाती ही है उठाने वाले हैं स्त्रियों के चप्पलें चाटने वाले कामिनियों की कृपा कटाक्ष के गुलाम कापुरुष लोग ही । उन्हें यह नहीं सूझता कि जितनी पंक्तियाँ कुनारियों के लिये मानस में है उससे दूनी सेभी अधिकपंक्तियाँ कुपुरुषों की निन्दारूप मानस में कही गई हैं ; जिसे किसी स्त्रीने कभी संकलन करके उसके विरुद्ध आवाज नहीं उठाई । इसका एक मात्र कारण यही है कि आजकी कालेज की तितिलियाँ स्वयं को प्राचीन भारतीय पातिव्रत परम्परानुसार,पति की सहधर्मिणी, दासी मित्र, सचिव आदि न मानकर पुरुषों को अपना प्रतिद्वन्दी भी नहीं थूक चाटने वाला गुलाम मानती हैं इसीसे वे मानस की नरनिन्दा वाली पंक्तियाँ नहीं पेश करतीं नारीनिन्दा की पंक्तियों के संग्राहकों को यह नहीं सूझता कि कुनारी निंदा से चौगुनी पंक्तियाँ मानस में सुनारी प्रशंसा परक है और नारी निन्दा की पंक्तियाँ प्राचीन

वेद पुराणादि सद्ग्रंथों की कतिपय पंक्तियों का शिष्ट अनुवाद मात्र है। परन्तु सुनारी प्रशंसा में कही गई पंक्तियों में प्राय: अनेक पंक्तियाँ गोस्वामी जी की अपनी हैं। मानसमें सुनारी की प्रशंसा नारी निंदा की पंक्तियों से चौगुनी से कम नहीं हैं। परन्तु वे प्रकाशपूर्ण पंक्तियाँ दिवान्धों को सूझतीं हीं नहीं उन्हें तो अमावस्या की मेघाच्छन्न रात्रि में निन्दाभासरूपी एकाध काले धब्बेही दीखपड़ते हैं।

अँग्रेजीके विद्वत्समाजकी यह बरसों पुरनी शङ्का है और जोलोग वेद शास्त्र नहीं देखते वेलोग मानसकार पर यह दोषारोपण किया ही करते हैं। किसी एक गोपी को जब अनेक लोगों ने लाँच्छित करना शुरू कर दिया तो उसने कहा था कि—

का वा न वारिहरणे यमुनामुपैति, का वा न पश्यति मुकुन्दमुखारबिन्दम्
का वा न याति ललना दधिविक्रयार्थं, हा धिग्विधे मयि कथं कुलटापवाद:

सम्भवत: ऐसा ही कुछ गोस्वामी जी भी कहते यदि आज होते तो। अर्थात् जब वेदों से लेकर मानसकार के समय तक के कवियों ने खूब खुलकर कुनारी निन्दा की है। तब आज कल के पढ़े लिखे कहाने वाले लोग गोस्वामीजी पर ही क्यों रोष प्रगट करते हैं। परवर्ती कवियों के लिए ही कहा जा सकता है कि लोग गोस्वामी जी के प्रभाव में आ गये होंगे। अत: उनके पूर्व के ही थोड़े ही से प्रमाण उपस्थित किये जाते हैं, सबका संकलन करने से तो एक बहुत बड़ा ग्रन्थ "नारी निन्दा महा पुराण" बन जायेगा। मैं प्रथम वेदों को ही लेता हूँ। वेदों में सैकड़ों स्थलों पर मुक्तकण्ठ से नारी की प्रशंसा की गई है और वैसे ही अनेक स्थलों पर विकट रूप से नारी निन्दा भी की गई है, वही हाल पुराणों मुनियों एवं कवियों और गोस्वामीजी

का भी है। अस्तु—अब बहुत थोड़े से उदाहरण पते सहित देखिये—

१—शुनमन्धाय भरमाह्वयत् सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति।
जारः कनीन इध चक्षदान ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान्॥
ऋ० १। ११७। १८

२—धृतव्रता आदित्या इषिरा आरे मत् कर्त रहसूरिवागः।
शृण्वतो वो वरुण मित्र देवा भद्रस्य विद्वाँ अवसे हुवे वः॥
गुप्त प्रसविनी (ऋ० २। २६। १

३—अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः।
पापासः सन्तो अनृता असत्या इदं पदमजनता गभीरम्॥४।५।५
पति बंचक परपति रति करई। रौ रौ नर्क कल्प सत परई॥

४—एषा सा नव्यमायुर्दधाना गूढ्वी तमो ज्योतिषोषा अबोधि।
अग्र एति युवतिरह्रयाणा प्राचिकितत् सूर्यं यज्ञमग्निम्॥७।८०।२

५—स्त्रिया अशास्यं मनः। उतो अह क्रतुं रघुम॥ ८। ३३।१७
इसपर सायण भाष्य—स्त्रियाः मनः—चित्तम्। अशास्यम्—पुरुषेण अशिध्यं शाशितुं अशक्यं प्रवलत्वात्। उतो—अपि। स्त्रियाः (अहः-संकल्प क्रतुं ज्ञानम्) रघुम्—लघुम्।

प्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान पं० श्रीपाददामोदरसातबलेकर जी का अर्थ—स्त्रियों के मन को संयम में रखना कठिन है। स्त्रियों के मनपर काबू रखना अशक्य है। स्त्रियाँ के कर्म खोटे हैं, उनकी बुद्धि छोटी होती है। (ऋग्वेद का सुबोधभाष्य मेधातिथि का दर्शन पृष्ठ ७२)

'लघु तिय कुछ करतूति मलीनी' 'होइ विकल सक मनहिं न रोकी'
'युवती सास्त्र नृपति बस नाहीं' 'अधम ते अधम अधम अतिनारी'

६—उत त्वाग्ने मम स्तुतो वाश्राय प्रतिहर्यते। गोष्ठं गाव

इवाशत ॥ ८ । ४३ । १७ छोटी बुद्धि ।

७—अभि गावो अनूषत योषा जारमिव प्रियम् । अगन्नाजि यथा हितम् । ६ । ३२ । ५

८—एप स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति । गच्छञ्जारो न योषितम् ॥ ९ । ३८ । ४

९—अभि त्वा योषणो दशजारं न कन्यानूषत ॥९।५६।३॥

१०—आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः ।
सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् ॥९।१०१।१४ ॥

११—कुह स्विद् दोषा कुह वस्तोरश्विना कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः । को वाँ शयुत्रा विधवेव देवरं मर्य न योषा कृणुते सधस्थ आ ॥ १० । ४० । २ ॥

१२—युवं कवीष्ठः पर्यश्विना रथं विशो न कुत्सो जरितुर्नशायथ ।
युवोर्ह मक्षा पर्यश्विना मध्वासा भरत निष्कृतं न योषणा ।१०।४०।६

१३—न तस्य विद्म तदु षु प्रवोचत युवा ह यद् युवत्याः क्षेति योनिषु । १० । ४० । ११ ।

वैसे यह चालीसवां सूक्त पूरा का पूरा नारी दोष दर्शन परही है ।

१४—यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारोभूत्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥१०।१६२।५।

१५—किसी नारी का कभी विश्वास न करना चाहिये ऐसा उर्वशी ने राजा पुरूरवा से कहा है । देखिये ऋ० १०।९५।१५

पुरूरवो मा मृथा मा प्र पप्तो मा त्वा वृकासो अशिवास उ क्षन् । न वै स्त्रैणानि सख्यानिसन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता

१६—न वै स्त्रैणानि सन्ति, सालावृकाणां हृदयान्येता ॥
मैतदादृथा नवै स्त्रैणं सख्यमस्ति पुनर्गृहानि

(शतपथब्रा. ११ । ५ । १ । ९)

इस १५ एवं १६ वें उद्धरण का विस्तार भागवत के स्कंध ६ अध्याय १४ में है ।

१७—मामृथाः पुरुषोसि त्वं मा स्म त्वाद्यु र्वृका इमे ।
क्वापि सख्यं न वै स्त्रीणां वृकाणां हृदयं यथा ॥ ३६ ॥
स्त्रियो ह्यकरुणाः क्रूराः दुर्मर्षा प्रियसाहसाः ।
घ्नन्त्यर्थेऽपि विश्रब्धं पतिं भ्रातरमप्युत ॥ ३७ ॥
विधायालीकविश्रम्भमज्ञेषु त्यक्त सौहृदाः ।
नवं नवमभीप्सन्तीः पुश्चल्यः स्वैरवृत्तयः ॥ ३८ ॥

१८—अनृतं साहसं माया मूर्खत्वमतिलोभिता ।
अशौचत्वं निर्दयत्वं स्त्रीणां दोषा स्वभावजाः ॥
(पंचतन्त्र १ । २०७)

१९—असत्यं साहसं माया मात्सर्यं चाति लुब्धता ।
निर्गुणत्वमशौचत्वं स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ॥
(हितोपदेश १ । २०८)

नारि स्वभाव सत्य कवि कहही । अवगुण आठ सदा उर रहहीं॥
साहस अनृत चपलता माया । भय अविवेक अशौच अदाया ॥

२०—मोघसंहिता एवं योषा तस्माद् य एव नृत्यति यो गायति
तस्मिन्नेवैता निमिश्लतमा इव ॥ (शतपथ ब्र० ३।२।४।६)

इसका अर्थ है कि स्त्रियाँ निरर्थक बातों की ओर (अधिक) जाती हैं । इसी से जो पुरुष नाचता और गाता है उसी को चाहने लगतीं हैं । [नाच और गान सुन्दर रूप और सुन्दर स्वर पर ही शोभित होता है । और इसके परिणाम स्वरूप अधिकांश स्त्रियाँ—

भ्राता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होइ विकल सक मनहिं रोकी । जिमि रवि मणि द्रव रविहिं बिलोकी

२१—सा चेदस्मै न दद्यात्कामेनामवक्रीणीयात् ।

(श० प० ब्रा० १४ । ६ । ४ । ७)

[अव क्रीणीयात् = आभरणादिना ज्ञापयेत 'वशीकुर्यात्' इति शङ्कराचार्यः]

२२—सा चेदस्मै नैव दद्यात् कामं एनां यष्ट्या वा पाणिनावा उपहत्य अतिक्रामेत् ।

(शतपथ ब्रा० १४ । ६ । ४ । ७ बृ० र० उ० ६ । ४ । ७)

२३—धिगस्तु योषणो नाम शठाः स्वार्थ परायणाः ॥

(बा० रा० २ । १२ । १०१)

२४—एषाहि प्रकृतिः स्त्रीणामासृष्टे रघुनन्दन ।
समस्थमनुरज्यन्ति विषमस्थं त्यजन्ति च ॥ ६ ॥
शतह्रदानां लोलत्वं शस्त्राणां तीक्ष्णतां तथा ।
गरुडानिलयोश्शैघ्यमनुगच्छन्ति योषितः ॥ ७ ॥

(वाल्मी० रा० ३ । १३ । ६, ७)

२५—वाक्यमप्रतिरूपं तु न चित्रं स्त्रीषु मैथिलि ।
स्वभावस्त्वेष नारीणामेषु लोकेषु दृश्यते ॥ २६ ॥
विमुक्तधर्माश्चपलास्तीक्ष्णा भेदकराः स्त्रियः ॥ ३० ॥

(वाल्मी० रा० ३ । ४५ । २६, ३०)

२६—ज्वलतामिह दूरेऽपि सरसा अपि नीरसाः ।
स्त्रियोहि नरकाग्नीनामिन्धनं चारु दारुणम् ॥

(यो० वा० १ । २१ । १२)

२७—पुष्प केशर गौरांगी नरमारण तत्परा ।
ददात्युन्मत्तवैवश्यं कान्ता विषलता यथा ॥ १६ ॥

२८—मन्दुरं च तुरंगाणामालानमिव दन्तिनाम् ।

पुंसां मंत्र इवाहीनां वन्धनं वामलोचना ॥ २१ ॥

२९—अवगुणमूलशूलप्रद प्रमदा सबदुख खानि ।
सर्वेषां दोषरत्नानां समुद्‌गकयाऽनया ।
दुःखश्रृंखलया नित्यमलमस्तु ममस्त्रिया ॥ २३ ॥

३०—शरत्पद्मोत्सवं वक्त्रं वचश्च श्रवणामृतम् ।
हृदयं क्षुरधाराभं स्त्रीणां को वेद चेष्टितम् ॥
३१—न हि कश्चित्प्रियः स्त्रीणामञ्जसा स्वाशिपात्मनाम् ।
पतिं पुत्रं भ्रातरं वा घ्नन्त्यथ घातयान्ति च ॥

(श्रीमद्भागवत महापुराण ६ । १८ । ४१, ४२)

नारिस्वभाव सत्य कवि······अशौच अदाया ॥

३२—निर्दयत्वं तथाद्रोहं कुटिलत्वं विशेषतः ।
अशौचं निर्घृणत्वं च स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ॥

३३—अन्तर्विषमया ह्येता बहिर्भोगे मनोहरा ।
गुञ्जाफलसमाकारा योषितः सर्वदैव हि ॥

(स्कंद महापुराण नागर खंड १५८ । ६०, ६१)

भ्राता पितापुत्र······रविहिं विलोकी ॥

३४—सुरूपं पुरुषं दृष्ट्वा क्षरन्ति मुनिसत्तम ।
स्वभाव एव नारीणां (शाम्बस्य शृणुकारणम्) ॥

(बाराह महा पुराण १ । ७७ । १८)

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी । ये सब ताड़न के अधिकारी ॥

३५—दुर्जनाः शिल्पिनो दासाः दुष्टाश्च पटहा स्त्रियः
ताड़िता मार्दवं याति न ते सत्कारभाजनम् ॥

(गरुड़ महापुराण आचार खण्ड १०९ । ३१)

३६—गर्दभः पटहो दासो ग्रामण्यः पशवः स्त्रियः ।

दण्डेनाक्रम्य भुञ्जीयान्नते सम्मानभाजनम् ॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागार प्रकरण ३ सामान्यनीति ५६४)

३७—यथैव मत्तमातंगं सृणिमुद्गर योगतः ।
स्ववशं कुरुते यन्ता तथा स्त्रीणां प्ररक्षकः ।(पद्ममहापुराण)

३८—स्त्री कृतेषु न विश्वासः कर्तव्यः सत्क्रियापरैः ।
मायाचारेणनिपुणा मोहयन्त्यविचक्षणान ॥

(शांडिल्य स्मृति ३ । १५३)

३९—स्त्रियः कुटिल चारिण्यः प्रणयस्य न भाजनम् ।

(क्षेमेन्द्र कृत रामायण मंजरी सुन्दर कांड २४५)

४०—नीचानां निम्नगानां च योषितां च स्वभावतः ।
धृतानामपि यत्नेन नोन्नतेः जायते रतिः ॥

(रामायण मंजरी सु० कां० २४६)

योग वशिष्ठ के वैराग्यप्रकरण का २१ वां अध्यायतो ३६ श्लोकों तक केवल नारी निन्दा ही है ।

भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही ।

४१—योषितो नावमन्येत न चासां विश्वसेद् बुधः ॥

(विष्णु महापुराण)

४२—भविष्य पुराण ब्रह्मखण्ड अध्याय ८-
नह्यासां प्रमदं दद्यान्न स्वातंत्र्यं न विश्वसेत् ।
विश्वस्तवच्च चेष्टेत न्यायं भर्त्सनमाचरेत ॥ १७ ॥
नाधिकारं क्वचिद्दद्याद् ऋते पाकादिकर्मणः ॥ १८ ॥
स्त्रीणां पत्युरधीनत्वात् पुमानेव हि निन्द्यते ।
भर्तुरेव हि तज्जाड्यं यद् भृत्यानामयोग्यता ॥ २५ ॥

तस्माद् यथोदितास्त्वेता रक्ष्या शाशनताड़नैः ।
ताड़नैश्च यथाकालं यथावत्समुपाचरेत् ॥ २६ ॥

उत्तमा सामदानाभ्यां मध्यमाभ्यां तुमध्यमा ।
पश्चिमाभ्यामुभाभ्यां च ह्यधमांसम्प्रसाधयेत् ॥ ६८ ॥

४३—अनृतं साहसं सौख्यं कामाधिक्यं स्त्रियाः पतिः ।
(शुक्र नीति ३ । १६४)

४४—रक्षिता यत्नतोऽप्येह भर्तृ ष्वेता विकुर्वते ।
(शुक्र नीति ६ । १०)

४५—ईप्सितस्य गुणा स्त्रीणामेकस्या बहुभर्तृ ता ॥
(म० भारत १ । २०४ । ८)

४६—निसर्ग तरला नार्यः को नियंत्रपितुं क्षमः ॥ (राजतरंगिणी)

४७—कामाश्चाशुचयः स्मृता ।
(चाणक्य १।१७) सहज अपावनि नारि)

४८—विनयं राजपुत्रेभ्यः पण्डितेभ्यः सुभाषितम् ।
अनृतंद्यूतकारेभ्यः स्त्रीभ्य' शिक्षेत् कैतवम् ॥ (चाणक्य)

४६—वचनेन हरन्ति वर्णना निशितेन प्रहरन्ति चेतसा ।
मधुतिष्ठति वाचि योषितां हृदये हलाहलं विषम् ॥
(बौद्ध कवि अश्वघोषकृत महाकाव्य सौंदरनन्द । ८।३५)

५०—यथा हन्ति व्याघ्रः शिशुरपिगृहीतो गृहगतः ।
तथा स्त्री संसर्गो बहुविधमनर्थाय भवति ॥
(सौंदरनन्द ८ । १६ पंचतंत्र १ । १६६)

५१—स्थानंनास्ति क्षणं नास्ति नास्ति प्रार्थयिता नरः ।
तेन नारद स्त्रीणां सतीत्वमुपजायते ।
(पंचतंत्र १ । १४६ हितोपदेश १ । १२२)

५२—जल्पन्ति सार्धमन्येन पश्यन्त्यन्यं सविभ्रमः।
हृद्गतं चिन्तयन्त्यन्यं प्रियः को नाम योषितम् ॥
(पं० तं० १ । १४६)

५३—अनार्थित्वं मनुष्याणां भयात्परिजनस्य च।
मर्यादायाममर्यादाः स्त्रियस्तिष्ठन्ति सर्वदा ॥ १ । १५६
बिनु अवसर भयते रह जोई ॥

५४—नासां कश्चिदगम्योऽस्ति नासां च वयसि स्थितः।
विरूपं रूपवन्तं वा पुमानित्येव भुञ्यते ॥ १ । १५५ ॥

५५—एता हसन्ति च रुदन्ति च कार्य हेतो,
विश्वासयन्ति च परं न च विश्वसंति।
तस्मान्तरेण कुलशीलवता सदैव,
नार्यः स्मशानबटिका इव वर्जनीयः ॥ १ । २०३ ॥

५६—तस्मात्सर्व प्रयत्नेव नामापि परिवर्जयेत्।
स्त्रीणामिह सर्वेषां य इच्छेन् सुखमात्मनः ॥ ४ । ५२

५७—शास्त्रं सुचिंतितधिया परिचिंतनीय-
माराधितोऽपि नृपतिः परिशंकनीयः।
अंकेस्थितापि युवती परिरक्षणीया,
शास्त्रं नृपो युवतयश्च कुतोवशित्वम् ॥

राखिय नारि यदपि उरमाहीं। युवती शास्त्र नृपतिवश नाहीं है॥

५८—यदन्तस्तन्न जिह्वायां यज्जह्वायां न तद्बहिः।
यद्बहिस्तन्न कुर्वन्ति विचित्रा चरिताः स्त्रियः ॥ ५ । ५३

५९—अन्तर्विषमयाह्येता बहिश्चैव मनोहराः।
गुञ्जाफलसमाकारा स्वभावादेव योषितः ॥ ४ । ५५

६०—आस्तां तावत्किमन्येन दौरात्मन्येन योषिताम्।
विधृतं स्वोदरेणापि घ्नन्ति पुत्रं स्वयं रुषा ॥ ५ । ५७ ॥

६१—यदिस्याच्छीतला वह्निश्चन्द्रमा दहनात्मकः ।
सुस्वादः सागरः स्त्रीणां तत्सतीत्वं प्रजायते ॥ ५ । ६४॥

६२—नस्त्रीणामप्रियः कश्चिन्न प्रियो वापि न विद्यते ।
गावस्तृणमिवारण्ये प्रार्थयन्ति नवं नवम् ॥
(हितो० १ । १२३--४ । ७)

६३—न लज्जा न विनीतत्वं न दाक्षिण्यं न भीरुता ।
प्रार्थनाभाव एवैका सतीत्वे कारणं स्त्रियाः ॥ १ । १२६

६४—नाग्निस्तुष्यति काष्ठानां नापगानां महोदधिः ।
नान्तकः सर्व भूतानां न पुंसां बामलोचना ॥

(२ । ११२, पं० तं० १ । १४८)

६५—गुणाश्रयं कीर्तियुतं च कांतं पतिं रतिज्ञं सदयं युवानम् ।
विहाय शीघ्रं वनिता व्रजन्ति, नरांतरं शीलगुणादिहीनम् ३।११४

गुण मन्दिर सुन्दर पति त्यागी । भजहिं नारि पर पुरुष अभागी॥

६६—न तादृशी प्रीतिमुपैतिनारी, विचित्र शय्या शयितापि कामम
यथाहि दूर्वादि विकीर्ण भूमौ, प्रयाति सौख्यं परकांतसंगम् २।११५

६७—सुरूपं पुरुषं दृष्ट्वा भ्रातरं यदि वा सुतम् ।
योनिः क्लिद्यति नारीणां सत्यं सत्यं हि नारद ॥

(चन्द्रकान्त वेदान्त ३ । ५)

भ्राता पिता पुत्र उर गारी । पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होइ विकल सक मनहिं न रोकी जिमि रवि मणि द्रवरविहिं बिलोकी

६८—स्त्रियो हि मूलं निधनस्य पुंसः, स्त्रियो हि मूलं व्यसनस्य पुंसः ।
स्त्रियो हि मूलं निरयस्य पुंसः, स्त्रियो हि मूलं कलहस्य पुंसः ॥
(चं० कां० भाग ३ विन्दु ५)

६९—आदि शङ्कराचार्य कृत मणिरत्नमाला या प्रश्नोत्तरी—
द्वारं किमेकं नरकस्य नारी० ॥ ३ ॥

७०—सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री० ॥ ६ ॥

७१—किमत्र हेयं कनकं च कान्ता ॥ ८ ॥

७२—नार्या पिशाच्या न च वंचितो यः ॥ १५ ॥

७३—ज्ञातुं न शक्यं किमस्ति सर्वे, योषिन्मनोयच्चरितं तदीयम् १६
जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

७४—विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी ॥ १६ ॥
'कवने अवसर का भयउ, गयउँ नारि विश्वास।
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही ॥

७५—किं तद्विषं भाति सुधीपमं स्त्री ॥ २६ ॥

आदि शङ्कराचार्य जी की ३१ श्लोक की अत्यन्त छोटी सी पुस्तक मणिरत्नमाला प्रश्नोत्तरी में दस बार नारी निन्दा कठोर शब्दों में की गई है। वेदातिरिक्त पञ्चतन्त्र और हितोपदेश के संग्रह कुछ अधिक यह दिखाने के लिये किया गया है कि ये दोनों ग्रन्थ छोटे छोटे बिद्यार्थियों के पाठ्य ग्रन्थ हैं। संस्कृत के बिद्यार्थियों को छोटी अवस्था ही से नारी दूषण बताये जाते हैं। भारतेतर देशों [बिदेशों] में तो रामचरित मानस से अधिक इन्हीं दोनों ग्रन्थों (पञ्चतन्त्र और हितोपदेश) का अनुवाद हुआ है।

स्मरण रहे कि नारी निन्दा की तरह नारी प्रशंशा भी मानस, वेदों पुराणों एवं काव्यों आदि में बहुत है। परन्तु स्त्रियों की गुलामी करने वाले पढ़े लिखे होने का दावा करने वाले पुरुष पुङ्गवों ने रामचरित मानस की दो चार चौपाइयों को

लेकर बहुत बड़ा ग्रावेला मचा रक्खा है कि 'तुलसी नारी-निन्दक थे ।' इसी से इस समाधान में कुछ प्रमाणसंग्रह कर दिये गये हैं।

स्त्रियों की तरह अनेक प्रकर के पुरुषों की भी कड़ी से कड़ी निन्दा मानस एवं उसके आकार ग्रन्थों निगमागमों में भरी पड़ी है। कोई चाहे तो संग्रह करके बताई जा सकती हैं। परन्तु पुरुषों की दृष्टि अपने दोषों पर जाती ही नहां और वर्तमान काल की अँग्रेजी पढ़ी लिखी स्त्रियाँ पुरुषों की गुलाम होतीं ही नहीं जो मानस से पुरुषों के दोष ढूँढ़कर उनका निराकरण चाहें या तूफान खड़ा करे कि 'तुलस-अपने से अतिरिक्त अन्य पुरुषों के निन्दक थे। आज तो—

नारि विवश नर सकल गुसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं ॥

प्रत्यत्त ही है।

तू ब्रह्मवादिनी गार्गी बनि, करि ब्रह्म सभा में ब्रह्मवाद।
दे याज्ञवल्क्य को विजय पत्र, ऋषिवर के यश का किया नाद
करता तेरा प्रतिवाद यहाँ, ऐसा न विज्ञ ऋषि मुनि प्रधान।
तू जगजननी नारी महान॥

५

मैत्रेय सुता मैत्रेयी बनि निजपति का लीन्हा ब्रह्म ज्ञान।
तेरे गुण गौरव की गाथा श्रुतियाँ निशिदिन करतीं बखान॥
द्विज क्रोधी कौशिक कुष्टी की तिय शाण्डिल्या अति करी सेव।
पति सेवा बल रवि रथ रोका रहि गये चकित नर नाग देव॥
तेरी विशेष शक्ती पाकर ब्रह्मा हरि शंकर शक्ति मान।
तू जग जननी नारी महान।

६

जब दशरथ ने सुरपुर जाकर, असुरों से ठाना महासमर।
रथ चक्र वीच निज भुजा डाल, रथ चालित कीन्हा कई प्रहर॥
सब देवलोक की ललनायें लखकर अनुपम तव दिव्य कान्ति।
हो गईं चकित रह गईं थकित, मिटगई रूप की महाभ्रान्ति॥
साक्षात् भरत बनि महाविष्णु, किये कैकेयी का दुग्धपान।
तू जग जननी नारी महान्।

७

दुखको न किसी ने अपनाया सुख का न किसी ने किया त्याग।
विपदः सन्तु नः शश्वत् कह, दुख को ही तूने लिया माँग॥
पति आज्ञा पाकर लोक लाज, मर्यादा तू ने ठुकरायी।
कर्ण युधिष्ठिर भीमार्जुन से वीर पुत्र तू जन्मायी॥

विदुला संजय आख्यान बता, पुत्रों पर धर दिया शान।
तू जग जननी नारी महान् ॥

८

श्री नंदरानी की अटल कीर्ति को, कौन आज तक गा पाया।
साक्षात ब्रह्म थे सुत जिसके, औ कन्या बनि जन्मी माया ॥
वृषभानलली की चेरी गण, भी शची शिवा से थीं बढ़कर।
सब जगत पितामह ब्रह्मा ने, जिनकी पगधूलि लिया सिरपर ॥
जिनकी भक्ती के वैभवका असलात्मा मुनि करते बखान।
तू जग जननी नारी महान ॥

९

श्री रानी जयराजकुंवरि, लै तीन सहस्र वीर नारी।
लाखों यवनों को काट काट, भर दई अवध की भू सारी ॥
उस महासती पद्मिनी तुल्य क्या कहीं जगत में नारि हुई।
जौहर कर जौहर चमकाया, जीते यवनों कीहार हुई ॥
झाँसी की लक्ष्मीबाई थी, अंग्रेजों को चंडी समान।
तू जग जननी नारी महान् ॥

१०

लोक लाज शृँखला जगत की, तनक न भी छू गई उसे।
राणा ने दिया महाविष कह, हरि पादोदक पीगई उसे ॥
भेजा नाग पिटारी में, कर बनमाला धर लई उसे।
अकबर की भेंट महाधन को, ठुकरा ठिकरा कर दई उसे ॥
गिरिधर गोपाल में लीन हुई, मीरा हरिमहिषी प्रधान।
तू जग जननी नारी महान ॥